नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

समझनी होंगी जनता की आकांक्षाएं

पांच राज्यों के हालिया विधानसभा चुनाव परिणामों में सबसे अधिक चर्चा पश्चिम बंगाल की हो रही है, जहां भारतीय जनता पार्टी ने लगभग 75 वर्षों में पहली बार स्पष्ट बहुमत हासिल कर एक नया राजनीतिक अध्याय रचा है. इसी तरह तमिलनाडु में द्रविड़ राजनीति की दशकों पुरानी पकड़ कमजोर पड़ती नजर आई है. इन परिणामों का केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी विश्लेषण आवश्यक है. प्रश्न यह है कि आखिर भाजपा लगातार चुनावी सफलता कैसे प्राप्त कर रही है, और क्यों पारंपरिक 'एंटी इंकंबेंसी' का प्रभाव उस पर सीमित दिखाई देता है?

यदि देश के विभिन्न राज्यों पर दृष्टि डालें तो एक लंबी सूची सामने आती है, जहां भाजपा ने लंबे समय तक सत्ता में बने रहने का रिकॉर्ड कायम किया है. गुजरात में 1990 के दशक से लेकर अब तक पार्टी की निरंतर उपस्थिति इसका उदाहरण है. असम जैसे जटिल सामाजिक संरचना वाले राज्य में भाजपा तीन लगातार कार्यकाल जीत चुकी है. मध्यप्रदेश में भी 2003 से पार्टी का प्रभुत्व बना हुआ है, केवल 2018 इसका अपवाद रहा. महाराष्ट्र, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में भी भाजपा ने सत्ता को बनाए रखने में सफलता हासिल की है. केंद्र में भी लगातार तीसरी बार सरकार बनाना इस प्रवृत्ति को और पुष्ट करता है. इसके विपरीत अधिकांश विपक्षी दल अपनी सरकारों को टिकाए रखने में असफल रहे हैं.

इस परिदृश्य का मूल कारण राजनीतिक दलों की कार्यशैली और जनता की बदलती अपेक्षाओं के बीच का अंतर है. आज का मतदाता केवल वादों से संतुष्ट नहीं होता, बल्कि वह ठोस परिणाम और प्रभावी शासन चाहता है. सरकारों के लिए आवश्यक हो गया है कि वे न केवल अपने चुनावी वादों को पूरा करें, बल्कि नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए मजबूत 'डिलीवरी सिस्टम' भी सुनिश्चित करें. इस संदर्भ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का शासन मॉडल अक्सर उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जहां योजनाओं की जमीनी स्तर तक निगरानी और कार्यान्वयन पर विशेष बल दिया जाता है. भाजपा की सफलता का एक महत्वपूर्ण आधार उसका सुदृढ़ संगठन और समर्पित कार्यकर्ता तंत्र भी है. पार्टी ने लंबे समय तक विपक्ष में रहकर संघर्ष किया है, जिससे उसे जनभावनाओं को समझने और उनके अनुरूप रणनीति बनाने का अनुभव मिला. इसके विपरीत, कई विपक्षी दल आज भी पारंपरिक राजनीतिक तरीकों,जैसे वंशवाद, जातीय समीकरण और सीमित वोट बैंक,पर निर्भर दिखाई देते हैं, जो वर्तमान समय में अपेक्षित प्रभाव नहीं छोड़ पा रहे हैं.

यह भी स्पष्ट होता जा रहा है कि भारतीय मतदाता का सामूहिक विवेक अत्यंत परिपक्व हो चुका है. वह सरकारों के कार्यों का सूक्ष्म मूल्यांकन करता है और उसी आधार पर निर्णय लेता है. केवल नारेबाजी या अल्पकालिक राजनीतिक लाभ अब चुनावी सफलता की गारंटी नहीं रह गए हैं. बेहतर प्रशासन, पारदर्शिता और जवाबदेही ही आज के राजनीतिक विमर्श के केंद्र में हैं.

लोकतंत्र में एक मजबूत और प्रभावी विपक्ष की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है. किंतु इसके लिए विपक्षी दलों को आत्ममंथन करना होगा. उन्हें यह समझना होगा कि लगातार हो रही पराजयों के पीछे क्या कारण हैं और अपनी रणनीतियों में किस प्रकार बदलाव लाया जा सकता है? जनता के बीच सक्रिय उपस्थिति, जमीनी मुद्दों पर निरंतर संघर्ष और विश्वसनीय नेतृत्व का निर्माण,ये सभी ऐसे तत्व हैं, जिनका कोई विकल्प नहीं है. कुल मिलाकर यदि विपक्षी दल अपनी कार्यशैली में आवश्यक परिवर्तन नहीं करते, तो चुनावी पराजयों का सिलसिला जारी रह सकता है. बदलते भारत में राजनीति के पुराने सूत्र अब अप्रासंगिक होते जा रहे हैं. ऐसे में समय की मांग है कि सभी दल जनता की आकांक्षाओं को समझें और उसी के अनुरूप अपनी दिशा तय करें.

पश्चिम बंगाल में भय की हार भरोसे की जीत

कृष्णमोहन झा

> न चुनावों में भाजपा ममता बनर्जी की मुस्लिमतुष्टीकरण की नीति पर निशाना साधकर जिस तरह हिन्दू मतदाताओं को एकजुट करने में सफल हुई उसने भी भाजपा की प्रचंड जीत का मार्ग प्रशस्त करने में महत्वपूर्ण योगदान किया.कुल मिलाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की करिश्माई लोकप्रियता, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के रणनीतिक कौशल, पार्टी नेताओं और जमीन से जुड़े कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम और राज्य में भय के माहौल की समाप्ति ने पश्चिम बंगाल में भाजपा के उस सुनहरे स्वप्न को साकार कर नया इतिहास रच दिया है जिसे कल तक नामुमकिन मानने वालों की कमी नहीं थी।आज घोषित चुनाव परिणामों ने उन्हें स्तब्ध कर दिया है.

पश्चिम बंगाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रचंड लहर में ममता बनर्जी का किला ढह चुका है. भारतीय जनता पार्टी (पूर्ववर्ती जनसंघ) के संस्थापक स्व.डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के गृहराज्य पश्चिम बंगाल के विधान सभा चुनावों में भाजपा ने प्रचंड बहुमत हासिल करके इतिहास रच दिया है.पश्चिम बंगाल विधानसभा के अभूतपूर्व चुनावों के अब तक घोषित नतीजों से भाजपा को जो अभूतपूर्व खुशी हो रही होगी उसे समझना कठिन नहीं है.

इसमें दो राय नहीं हो सकती कि भाजपा ने पश्चिम बंगाल विधानसभा के इन चुनावों को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया था इसलिए भाजपा शासित 19 राज्यों के मुख्यमंत्रियों, सैकड़ों पार्टी पदाधिकारियों और हजारों ,कार्यकर्ताओं की फौज ने पार्टी को पश्चिम बंगाल में पहली बार सत्ता की दहलीज तक पहुँचाने के लिए रात दिन एक कर दिये थे.राज्य में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने स्वयं ही पार्टी के चुनाव अभियान की बागडोर संभाल रखी थी।देश के किसी राज्य में चुनाव प्रक्रिया के दौरान उपद्रवी तत्वों पर अंकुश लगाने के लिए चप्पे चप्पे पर सुरक्षा बलों की इतनी बड़ी संख्या में तैनाती भी संभवत्-पहले कभी नहीं की गई होगी.कहने का तात्पर्य यह कि इतनी ऐहतियात बरतने के बाद राज्य में पहली बार भाजपा की सरकार बनने में संशय की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं बची थी.

राज्य में दूसरे और अंतिम चरण का मतदान समाप्त होने के तत्काल बाद जब 8 में से 6 एजेंसियों ने अपने एक्जिट पोल में भाजपा को बहुमत मिलने की भविष्यवाणी कर दी तब अनेक राजनीतिक विश्लेषकों ने भी उसे अतिशयोक्ति मान कर यह राय व्यक्त की थी कि पश्चिम बंगाल की राजनीति में ममता बनर्जी का ऐसा पराभव संभव नहीं है लेकिन चुनाव परिणामों ने साबित कर दिया है कि ममता बनर्जी अपनी सरकार के विरुद्ध जनता में तेजी से बढते असंतोष का अंदाज़ा लगाने में चूक गई. ममता बनर्जी राज्य में गत डेढ़ दशकों से सत्तारूढ़ अपनी पार्टीतृणमूल कांग्रेस की शोचनीय पराजय के लिए भले ही एस आई आर को जिम्मेदार ठहराएं लेकिन इस कड़वी हकीकत से उन्हें मुंह नहीं मोड़ना चाहिए कि पिछले पांच सालों में चरम पर पहुंची एंटी इंकम्बेसी ने उनकी पार्टी को सत्ता से बाहर का दरवाजा दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

ममता बनर्जी को पूरी विनम्रता के साथ अब यह स्वीकार करने का साहस दिखाना चाहिए कि गत पांच सालों में उजागर हुए भ्रष्टाचार के गंभीर मामलों में तृणमूल कांग्रेस के मंत्रियों और नेताओं की संलिप्तता , संदेश खाली में महिलाओं के शारीरिक शोषण के आरोप, आरजीकर मेडिकल कालेज में महिला डाक्टर की बलात्कार के बाद हत्या सहित राज्य के विभिन्न भागों में महिला उत्पीड़न की घटनाएं, तृणमूल कांग्रेस कार्यकर्ताओं की निरंकुशता और युवाओं की बढ़ती बेरोजगारी जैसे कारकों ने उनके पांव के नीचे की जमीन छीन ली.पश्चिम बंगाल विधानसभा के इन चुनावों में जब 92 प्रतिशत से अधिक का रिकार्ड मतदान हुआ उसी समय यह संकेत मिल गये थे कि इस बार मतदाताओं ने निर्भय होकर मतदान किया जिसका श्रेय केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को जाता है जिन्होंने राज्य में एक पखवाड़े से अधिक समय तक मौजूद रहकर मतदाताओं के मन में बैठे उस डर को निकालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

मतदान की तारीख के पहले से ही बड़ी संख्या में केंद्रीय सुरक्षा बलों की तैनाती ने मतदाताओं के मन में यह भरोसा जगाया कि अब उन्हें तृणमूल कांग्रेस के निरंकुश कार्यकर्ताओं से डरने की आवश्यकता नहीं है.इतना ही नहीं,केंद्रीय गृह मंत्री ने पश्चिम बंगाल की जनता को आश्वस्त कर दिया था कि चुनाव परिमाणों की घोषणा के बाद भी केंद्रीय सुरक्षा बलों को एकदम वहां से नहीं हटाया जाएगा.गौर तलब है कि गत विधानसभा चुनावों के बाद तृणमूल कांग्रेस कार्यकर्ताओं के एक वर्ग पर राज्य के उन क्षेत्रों में हिंसक गतिविधियों में लिप्त होने के आरोप लगे थे जहां तृणमूल कांग्रेस को पराजय का सामना करना पड़ा था. इ

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक है)

दिल्ली डायरी

इंडिया गठबंधन के भविष्य पर उठ रहे सवाल !

प्रवेश कुमार मिश्र

पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव परिणाम में जिस तरह से पश्चिम बंगाल में सत्ताधारी टीएमसी और तमिलनाडु में डीएमके पराजित हुई है उसके बाद इंडिया गठबंधन के भविष्य को लेकर अटकलबाजी शुरू है. कहा जा रहा है कि उक्त दोनों दलों के पराजय के बाद कांग्रेस पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेता भविष्य की लडाई अकेले दम पर लडने के पक्ष में दलील दे रहें हैं . जबकि ज्यादातर नेता जल्द से जल्द विपक्षी समूह को एकजुट करने के उद्देश्य से बैठक बुलाकर भविष्य की रणनीति और विपक्षी एकजुटता पर व्यापक चर्चा कराने के पक्ष में अपना तर्क दे रहे हैं .

हालांकि एक चर्चा यह भी हो रही है कि कांग्रेस को छोडकर समान विचारधारा वाले दलों के एक बडे समूह को एकजुट कर तीसरे मोर्चे के रूप में देश के मतदाताओं के सामने विकल्प रखा जाए. लेकिन इन सभी चर्चाओं के बीच सबकी निगाहें सपा, राजद, टीएमसी, डीएमके, शिवसेना उद्धव जैसे बडे दलों के रूख पर टिकी है.

भाजपा का उत्तरपूर्व पर कब्जा के आगे क्या

पश्चिम बंगाल विजय व असम में पुनर्वापसी के बाद राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा हो रही है कि भाजपाई विजयी रथ अब उत्तरपूर्वी राज्यों पर फतह के बाद किस दिशा का रूख करेगा. हालांकि भाजपा दक्षिण में कमल खिलाने के अपने मुहिम में लगातार प्रयास के बावजूद असफल हो रही इसलिए कहा जा रहा है कि 2029 लोकसभा चुनाव के पहले उसका प्रयास पंजाब व हिमाचल प्रदेश पर कब्जा करने का हो सकता है. क्योंकि पिछले दिनों जिस तरह से पंजाब से संबंध रखने वाले आम आदमी पार्टी के सात राज्यसभा सदस्यों ने भाजपा का दामन थामा है उससे साफ हो रहा है कि भाजपा पंजाब में एक साथ कांग्रेस, अकालीदल और आप को एक साथ चुनौती देकर बडा संदेश देने का प्रयास करेगी. संभव: इसी वजह से भाजपा के मिशन पंजाब धमक से आम आदमी पार्टी के रणनीतिकार परेशान हैं.

दिग्विजय सिंह के बयान के तलाशे जा रहे हैं मायने

मध्य प्रदेश कांग्रेस में हाल ही में वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह और प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी के बीच एक दिलचस्प जुबानी जंग देखने को मिली है, जिसने राज्य की राजनीति में हलचल के साथ-साथ दिल्ली में भी चर्चा का विषय बनाया हुआ है. पिछले दिनों भोपाल में हुई कांग्रेस के अनुसूचित जाति विभाग की बैठक में दिग्विजय सिंह ने जीतू पटवारी पर तंज कसते हुए एक मुहावरे का प्रयोग किया कि गुरू गुड़ रह गया और चेला शक्कर हो गया. हालांकि बयान का अंदाज व बाद में पटवारी का जवाब भी माहौल के अनुकूल ही था लेकिन बाद में इसको लेकर कानाफूसी आरंभ हो गई. कांग्रेस इस पूरी घटना को एक सामान्य संवाद बता रही है, जबकि राजनीतिक गलियारों में इसे पुराने और नए नेतृत्व के बीच शक्ति प्रदर्शन के रूप में देखा जा रहा है.

केरल के मुख्यमंत्री बनने के लिए दिल्ली में लाबिंग

कांग्रेस के नेतृत्व वाला यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट केरल में पूरे एक दशक के अंतराल के बाद सत्ता में लौटा है . चुनाव परिणाम के बाद कांग्रेस पार्टी के अंदर मुख्यमंत्री पद हासिल करने के लिए पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के बीच रस्साकस्सी आरंभ है . चर्चा है कि कांग्रेस के दिग्गज नेता के सुधाकरन ने पार्टी आलाकमान को पत्र लिखकर केसी वेणुगोपाल को मुख्यमंत्री बनाने की सिफारिश की है . संगठन महासचिव वेणुगोपाल को राहुल गांधी का करीबी माना जाता है . चर्चा है कि उनके समर्थकों ने केरल में उनके कटआउट लगाकर अपनी पसंद स्पष्ट कर दी है . जबकि निवर्तमान सरकार में विपक्षी नेता रहे वी डी सतीशन को भी एक मजबूत दावेदार माना जा रहा है . एग्जिट पोल में उन्हें मुख्यमंत्री पद के लिए एक पसंदीदा चेहरे के रूप में दिखाया गया है . उन्होंने दिल्ली में अपनी पकड़ मजबूत करने और समर्थन जुटाने के लिए विधायकों से संपर्क साधना शुरू कर दिया है . इसके अलावा वरिष्ठ नेता रमेश चेन्निथला ने भी मुख्यमंत्री पद के लिए सक्रिय रूप से लॉबिंग शुरू की है . वे नवनिर्वाचित विधायकों और राष्ट्रीय नेतृत्व के साथ बैठकें कर रहे हैं ताकि अपना पक्ष मजबूत कर सकें .

दुष्कर्म व हत्या के बढ़ते मामले चिंताजनक

कटु सत्य है कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के नारे के बावजूद बेटियां असुरक्षित हैं . इंसान की शक्ल में नरपिशाच इन मासूमों को अपना शिकार बना रहे हैं . इन नराधमों का अस्तित्व समाज के लिए बहुत बड़ा खतरा है . राज्य में प्रतिदिन 27 लड़कियां वासना की बलि चढ़ जाती हैं . हर 53 मिनिट में एक दुष्कर्म होता है . अबोध बालिका जीवित रहकर भंडाफोड़ न कर दे इसलिए उसकी हत्या कर दी जाती है . जंगली जानवरों से भी गए बीते ऐसे तत्व समाज का कोढ़ हैं . पुणे जिले के नरसापुर में महाराष्ट्र दिन पर ऐसी दुर्दैवी घटना हुई जिसमें अत्याचार के बाद बालिका की निर्मम हत्या की गई . इसमें जब रोष भड़का और संतप्त नागरिकों ने मांग की कि गुनहगार को चौराहे पर फांसी पर लटकाया जाए ! एक अन्य घटना में नाना ने अपनी अबोध नातिन को शिकार बना रिश्तों को कलंकित किया . यह कैसी विकृति है . ऐसी घटनाएं मन को सुन्न कर देती हैं . हर कोई चिंतित हो जाता है कि घर के बच्चे सुरक्षित हैं या नहीं . तर्क दिया जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में पुलिसकर्मियों की कम संख्या और साधनों का अभाव होने से अपराध रोक पाना मुश्किल है . लेकिन समाज को जागृत रहकर दरिंदों पर नजर रखनी होगी . जो श्रमिक परिवार बच्चों को अकेलाछोड़ काम पर चले जाते हैं उनकी भी चिंता बढ़ गई होगी . बच्चों को गुड टच-बैड टच का अंतर तथा परिचित या अपरिचित व्यक्ति की संदिग्ध हरकतों के प्रति सतर्क करना होगा तथा उसके वह झांसे में न आते हुए तुरंत अभिभावकों या पड़ोसियों को बताना होगा . ऐसे नराधमों को फास्ट ट्रैक कोर्ट में मामला चलाकर कठोरतम सजा दी जानी चाहिए . कोई भी वकील ऐसे राक्षसों का बचाव न करे . इसके अलावा सोशल मीडिया पर आने वाली उत्तेजक व अश्लील सामग्री पर भी तत्काल रोक लगाई जाए जो विकृति को बढ़ावा देते हैं .

ऐसे नराधमों को फास्ट ट्रैक कोर्ट में मामला चलाकर कठोरतम सजा दी जानी चाहिए. कोई भी वकील ऐसे राक्षसों का बचाव न करे.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

आज चल रही है स्पेस एज लेकिन राजनीति में परसेंटेज

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, इस स्पेस एज में परसेंटेज की बहुत चिंता की जाती है. जिस विद्यार्थी का 10वीं और 12वीं में अच्छा परसेंटेज है, वह नामी वह नामी शिक्षण संस्था या कॉलेज में प्रवेश पा सकता है. एक जमाना वह भी था जब 60 प्रतिशत अंक लेकर प्रथम श्रेणी में पास होना और किसी विषय में 75 प्रतिशत अंक लेकर डिस्टिंक्शन पाना गौरवपूर्ण माना जाता था. अब तो 90 परसेंट से कम वालों की कोई कद्र ही नहीं है. छात्र पर दबाव रहता है कि ज्यादा से ज्यादा मार्क्स हासिल करे. कुछ तो शत-प्रतिशत तक नंबर ले आते हैं. क्या इसका मतलब यह हुआ कि उनकी अक्ल पाठ्यपुस्तक के लेखक के बराबर होती है? दिल्ली यूनिवर्सिटी के कुछ कॉलेजों में तो एडमिशन का कट-ऑफ 100 प्रतिशत नंबर पर होता है. आखिर इतना परसेंट हासिल करने का क्या राज है?'

हमने कहा, 'आपको मालूम होना चाहिए कि दुनिया का सारा व्यवहार परसेंटेज पर चलता है. अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप इम्पोर्ट पर 25 से 50 परसेंट तक टैरिफ लगाते हैं. इस तरह की लूट से वह अमेरिका को पुन: शक्तिशाली या ग्रेट बनाना चाहते हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, उतनी दूर की बात छोड़िए. अपने देश के नेता और अधिकारी भी परसेंटेज निकालने में प्रवीण हैं. विकास का रथ परसेंटेज के पहियों पर चलता है. मंत्री, सांसद, विधायकों और अफसरों को जो ठेकेदार ज्यादा परसेंटेज देता है, उसका टेंडर पास हो जाता है. सारा खेल दलाली और कमीशन का है. कितने ही अधिकारी अपने वेतन से ज्यादा तो कमीशन में कमा लेते हैं. अपने ही शहर में परसेंटेज के लालच में एक सड़क साल में 4 बार खोदी और फिर बनाई जाती है. कुछ योजनाएं सिर्फ कागज पर रहती हैं लेकिन उनकी निर्माण लागत के परसेंटेज की पहले ही बंदरबांट हो जाती है.'

हमने कहा, 'जब राजीव गांधी प्रधानमंत्री थे तब उन्हें परसेंटेज का रहस्य मालूम था. उन्होंने कहा था कि हम केंद्र से गरीब के लिए 1 रुपया भेजते हैं लेकिन उसे सिर्फ 15 पैसे मिल पाते हैं. मतलब यह कि 85 प्रतिशत रकम बीच के लोग खा जाते हैं. मोदी युग में रकम सीधे खाते में डाली जाती है फिर भी भ्रष्टाचारी लोग अपनी कमाई का रास्ता निकाल ही लेते हैं. नेताओं की राजनीति भी अगड़े-पिछड़े, जाति, भाषा के परसेंटेज पर निर्भर रहती है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12249

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	■	3	4		■	5
6		■	7		■	8	
	■	9	■	10	11		
12	13		14	■	15		■
■	16			■		■	17
18		■	19	20		■	
	■	21			■	22	
23			■	24			

ऊपर से नीचे
1. संगी, साथी, नौकर, भृत्य (सं.) 2. ललाट, माथा, सिर, सामने या ऊपर का हिस्सा 3. उपस्थित हुआ, धाय 4. घर, मकान (सं.) 5. पुष्परज 8. किसी कार्य विशेष के निमित्त नियुक्त आयोग का सदस्य जिसे विशेष अधिकार दिया गया हो, कमिश्नर 9. पुत्री (सं.) 11. वर के गले में पहनाई जाने वाली माला 13. धोना (सं.) 14. पितृ-पक्ष, श्राद्ध 17. इच्छा, लालसा, चाह 18. बहुत ऊंचा और गोलाकार स्तंभ, लाट 20. प्राणियों की सारी शारीरिक क्रियाओं का सदा के लिए अंत होना, अशक्त होना 21. समाप्ति 22. वह छिछला गोल बर्तन जिस पर रोटी सेंकते हैं

बाएं से दाएं
1.समान, तुल्य, जो ऊबड़-खाबड़ न हो 3. सहारा, भरोसा, आस, आश्रयदाता 6. दस्ता, मूठ, कुर्सी की बांहें 7. स्मृति, स्मरण करने की क्रिया 8. लकड़ी काटने का एक औजार 10. ऐसा समय जिसमें पुरानी बातें प्राय: समाप्त होकर नई बातें प्रचलित हो रही हों 12. बचावपूर्ण 15. लहू 16. लज्जित होना या करना 18. मछली, एक राशि (सं.) 19. वह पात्र जिसमें पौधे लगाए जाते हैं 21. फासला, भेद, फरक, दूरी 22. रात (सं.) 23. चांदी 24. जो नष्ट होने वाला है, नाश को प्राप्त होने वाला

Solution 12248

च	टो	रा	■	ब	ल	वा	न
मा	■	ज	ब	ड़ा	■	■	■
च	क	मा	■	■	इ	न्सा	न
म	■	ता	ना	बा	ना	■	के
■	ला	■	टा	ल	म	टो	ल
बे	ग	म	■	स	■	ना	■
का	त	ना	■	खा	स	■	जी
री	■	ही	न	■	ई	शा	न

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक सहयोग मिलेगा, शिक्षा के क्षेत्र में यात्रा होगी, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यो में मन खिन्न रहेगा, व्यापार में व्यर्थ की भागदौड़ एवं व्यय में वृद्धि होगी,मित्र के कारण तनाव रहेगा, वर्ष के अन्त में प्रतिष्ठा एवं यश में वृद्धि होगी, घरेलू कार्यो में व्यस्तता रहेगी, व्यय में नियंत्रण रखें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक तनाव रह सकता है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को कर्मचारियों के सहयोग से कार्यो में सफलता मिलेगी, चिन्ता का निवारण होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक कमी का अनुभव होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यो में सफलता मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नौकरी में सफलता, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शिक्षा अच्छी रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को धार्मिक यात्रा के योग हैं.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक कोमल, सुन्दर, परोपकारी, आकर्षक एवं प्रभावशाली होगा, शिक्षा में अग्रणी होगा, अपने कार्य के प्रति सचेत एवं माता पिता का मार्गदर्शन लेने वाला होगा, प्रतिभाशाली और पराक्रमी होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

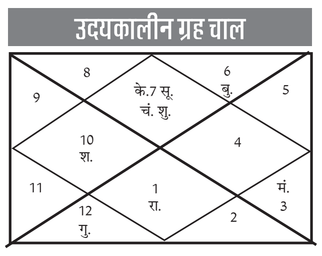

पंचांग

रा.मि. 16 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पंचमीं बुधवासरे दिन-रात, मूल नक्षत्रे दिन 1/26, सिद्ध योगे रात 10/58, कौलव करणे सू.उ. 5/28, सू.अ. 6/32, चन्द्रचार धनु, शु.रा. 9, 11, 12, 3, 5, 7 अ.रा. 10, 1, 2, 4, 6, 8 शुभांक- 2, 4, 8.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पंचमीं को मूल नक्षत्र के प्रभाव से जीरा, धनियां, लालमिर्च, दाख, जायफल, लौंग, के भाव में अच्छी तेजी होगी. गेहूँ, जौ, चना, मूँग, मोट, ज्वार, बाजरा के भाव में नरमी होगी. भाग्यांक 2638 है.

मेष- शुभ समाचार मिल सकते हैं, अटका धन मिलने के आसार हैं, धन मान-सम्मान में वृद्धि होगी, अचानक नए कार्य की रूपरेखा बनेगी, सम्मान प्राप्त होगा.

वृषभ- जिद में आकर आप अपना नुकसान कर सकते हैं, कोई ऐसा कार्य बनेगा, जिससे मानसिक प्रसन्नता होगी, विवादों को टालने का प्रयास करें.

मिथुन- भावनात्मक रिश्तों में चल रहे गतिरोध से निराशा होगी, आय के साधनों में वृद्धि होगी, नए कार्य की रूपरेखा पर विचार विमर्श होगा, संयम रखें.

कर्क- नई जिम्मेदारी मिलने की संभावना है, जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा, धन लाभ होगा. व्यर्थ की चिन्ता रहेगी, मनोरजन आदि पर खर्च होगा.

सिंह- जो लोग आपसे नाराज चल रहे थे, उनका सहयोग मिलेगा, मानसिक तनाव दूर होगा, रोगी की चिन्ता रहेगी, कार्य की अधिकता रह सकती है.

कन्या- दूसरों के कार्यो में दखल न करें, परिश्रम अधिक करना होगा, साझेदारी में सतर्कता बांछनीय, पारिवारिक सुख संतोष रहेगा. यश मिलेगा.

तुला- अधिकारियों का सहयोग न मिलने से परेशानी होगी, आय का नया मार्ग प्रशस्त होगा, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

वृश्चिक- आत्मशक्ति से बड़े कार्य में सफलता मिलेगी, छोटी-मोटी बातों पर उत्तेजित होकर अपना कार्य न बिगाड़े, आर्थिक मामले को लेकर यात्रा होगी.

धनु- कानूनी मामले उलझेंगे, लेनदेन के मामलों में आरोप लग सकते हैं. आर्थिक एवं सामाजिक कार्यो में सफलता का योग है, संतान के कार्यो में विशेष ध्यान देना पड़ेगा.

मकर- नए कार्य की शुरूआत में दिक्कत होगी, मामूली बात पर मित्रों से कहासुनी हो सकती है. आर्थिक मामलों में सफलता मिलेगी. विलासिता की वस्तुओं का संचय होगा.

कुम्भ- गलतियां सुधार कर आगे बढें, सफलता की राह आसान होगी. संतान से सुखद समाचार मिलेगा, कोई ऐसा कार्य बनेगा, जिससे आर्थिक समृद्धि होगी.

मीन- जीवनसाथी केव्यवहार से खिन्नता होगी, नए संपर्को का लाभ मिलेगा, मैत्री संबंधों में सुधार होगा, समस्याओं का निराकरण होगा.

SUDOKU 7381

			1					6
7		2		5				9
		4			2	7	5	
5	7				9		1	8
				6				
6	1		3				2	4
	5	1	9			8		
2				8		9		1
9					3			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7380

1	9	3	2	4	6	5	8	7
4	7	2	5	1	8	3	6	9
6	5	8	7	3	9	1	2	4
3	8	9	4	5	1	2	7	6
2	4	7	6	9	3	8	1	5
5	1	6	8	7	2	4	9	3
8	2	4	9	6	5	7	3	1
7	6	1	3	2	4	9	5	8
9	3	5	1	8	7	6	4	2